महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म0प्र0)

Batches of performing Art-

बी0पी0ए0 (तबला वादन एवं गायन) चार वर्षीय पाठ्यक्रम

E W F Session

2018-19

शास्त्रीय गायन

डॉ0 विवेक फडनीस

पाठ्यक्रम समन्वयक

व्यावसायिक कला विभाग

कला संकाय

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म0प्र0)

व्यावसायिक कला विभाग (कला संकाय)

पाठ्यक्रम के अध्ययन मण्डल (Board of Studies)

विषय : B.P.A. Batchlor of Performing Art (चार वर्षीय पाठ्यक्रम पारित करने विषयक)

स्थान : व्यावसायिक कला विभाग (कला संकाय)

विदित हो कि UGC द्वारा संदर्भित विषयानुसार B.Mus पाठ्यक्रम का B.P.A एवं M.Mus पाठ्यक्रम की जगह M.P.A. करने बावत् निर्देशानुसार आज दिनांक ~~29-10-2018~~ 02/11/2018 को कला संकाय में अध्ययन मण्डल बैठक आहूत की गई। बैठक में निम्न महानुभाव उपस्थित हुए।

1. डॉ0 वाई0के0सिंह — अधिष्ठाता कला संकाय — अध्यक्ष
2. डॉ0 गोपाल मिश्र — विभागाध्यक्ष–ज0गु0रा0वि0वि0चित्रकूट — विशेषज्ञ
   डॉ कुसुम सिंह — उपकुल सचिव अकादमी —
3. डॉ0 जयशंकर मिश्र — विभागाध्यक्ष–व्या0क0वि0 — सदस्य एवं संयोजक
4. डॉ0 विवेक फड़नीस — प्रवक्ता–प्रवर श्रेणी — सदस्य एवं पाठ्यक्रम समन्वयक
5. डॉ0 सुषमा गूजर — सदस्य

DEAN FACULTY OF ARTS M.G.C.G.V. Chitrakoot Distt. Satna (M.P.) 02/11/18

<u>बैठक का कार्यवृत्त :</u>

दिनांक 02/11/18 को सम्पन्न अध्ययन मण्डल की बैठक में B.P.A. (तबला वादन/गायन) चार वर्षीय पाठ्यक्रम को वार्षिक पद्धति के अनुरुप तैयार किया गया। विस्तृत सलेबस पर गहन विमर्श के उपरान्त इसे पारित किया गया।

1. पारित पाठ्यक्रम चार वर्षीय होगा। प्रथम वर्ष क्रेडिट...................., द्वितीय वर्ष........................, तृतीय वर्ष........................, चतुर्थ वर्ष..............................., निर्धारित है। इस प्रकार कुल क्रेडिट ....है।
2. B.P.A. पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु अर्हता नियमानुसार 10+2 होगी। संगीत विषय में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को प्राथमिकता दी जायेगी।
3. प्रश्न पत्र वि0वि0 के निर्धारित प्रारुप अनुसार ही होंगे।

2/11/18 DEAN ARTS

4. प्रोयोगिक परीक्षाऐं, सैद्धान्तिक प्रश्नों हेतु निर्धारित क्रेडिट भार एवं अंक विभाजन को मान्य किया जायेगा।
5. आवश्यकतानुसार एवं वि0वि0 की मुख्य विचार के परिणाम स्वरुप पाठ्यक्रम में आंशिक संशोधन हेतु विभागाध्यक्ष को अधिकृत किया गया है।
6. V.S.R. पाठ्यक्रम अन्य वार्षिक पाठ्यक्रमानुसार संचालित होगा। यथावत लागू किये जाने की स्वीकृति प्रदान की गयी।
7. बाह्रय एवं आन्तरिक परीक्षा मूल्यांकन विश्वविद्यालय के नियमानुसार होगा।
8. अध्ययन मण्डल द्वारा अनुशंसित पाठ्यक्रम आगामी विद्या परिषद में अनुमोदनार्थ प्रस्तुत किया जावेगा।
9. यद्यपि यह पाठ्यक्रम वार्षिक है। यह पाठ्यक्रम सत्र 2018–19 से लागू किया जाए।
10. पाठ्यक्रम अध्यादेश को अध्ययन मण्डल द्वारा पारित किया गया।

विभागाध्यक्ष महोदया के धन्यवाद के साथ अध्ययन मण्डल की बैठक सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई।

11, पाठ्यक्रम स्तर 1 KSV Khairagarh, RMT Gwalior के समकक्ष होगा

DEAN
FACULTY OF ARTS
M.G.C.G.V. Chitrakoot
Distt.-Satna (M.P.

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म0प्र0)

व्यावसायिक कला विभाग (कला संकाय)

पाठ्यक्रम – बी0पी0ए0 तबला वादन एवं गायन

"अध्यादेश"

1. पाठ्यक्रम की अवधि	– 4 वर्ष
2. सीट	– 15
3. प्रवेश अर्हता	– 10+2
4. प्रवश प्रक्रिया	– विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित नियमानुसार
5. अध्ययन एवं परीक्षा पद्धति	– क्रेडिट आधारित सेमेस्टर पद्धति ग्रेड निर्धारण 10 प्वाइन्ट स्केल
6. शुल्क	– विश्वविद्यालय द्वारा समय–समय पर निर्धारित शुल्क
7. आरक्षण	– म0प्र0 शासन द्वारा निर्धारित व दिशा निर्देशित नियमानुसार
8. परीक्षा नियम	– विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित परीक्षा नियम इस पाठ्यक्रम पर भी प्रभावशील होंगे।

नोट :

1. बिन्दु क्रमांक 05 एवं 08 के सम्बन्ध में विश्वविद्यालय के अन्य स्नातक पाठ्यक्रमों बी0ए0, बी0एस0सी0, बी0कॉम में सत्र 2018–19 से लागू परीक्षा पद्धति एवं नियम इस पाठ्यक्रम पर भी लागू होगा।
2. Fee structure of this course will be as like other Traditional yearly courses.

2/11/18   02/11/18   02/11/18

B.P.A. (बेचलर ऑफ परफोरमिंग आटर्स)

(~~तबला वादन~~ / गायन)

पाठ्यक्रम संरचना – प्रथम वर्ष

क्र0	प्रश्न पत्र	पूर्णांक	आंतरिक	बाह्य	क्रेडिट
1	संगीत का विज्ञान	100	20	80	6+0
2	संगीत का क्रियात्मक सिद्धान्त	100	20	80	6+0
3	पखावज शास्त्र / लोक संगीत शास्त्र	100	20	80	6+0
4	प्रदर्शन एवं मौखिक तबला वादन / गायन	100	20	80	0+6
5	V.S.R	100	20	80	1+1
6	~~पखावज~~ / लोक संगीत–प्रायोगिक	100	20	80	0+6

ताल वाद्य / सुगम, लोक संगीत

द्वितीय वर्ष

क्र0	प्रश्न पत्र	पूर्णांक	आंतरिक	बाह्य	क्रेडिट
1	संगीत का विज्ञान	100	20	80	6+0
2	संगीत का क्रियात्मक सिद्धान्त	100	20	80	6+0
3	पखावज शास्त्र / लोक संगीत शास्त्र	100	20	80	6+0
4	प्रदर्शन एवं मौखिक तबला वादन / गायन	100	20	80	0+6
5	~~पखावज~~ / प्रायोगिक-लोक संगीत	100	20	80	0+6

तालवाद्य / सुगम लोक संगीत

तृतीय वर्ष

क्र0	प्रश्न पत्र	पूर्णांक	आंतरिक	बाह्य	क्रेडिट
1	संगीत का विज्ञान	100	20	80	6+0
2	संगीत का क्रियात्मक सिद्धान्त	100	20	80	6+0
3	पखावज शास्त्र / लोक संगीत शास्त्र	100	20	80	6+0
4	प्रदर्शन एवं मौखिक तबला वादन / गायन	100	20	80	0+6
5	~~पखावज~~ / प्रायोगिक, लोक संगीत	100	20	80	0+6

तालवाद्य / सुगम, लोक संगीत

चतुर्थ वर्ष

क्र0	प्रश्न पत्र	पूर्णांक	आंतरिक	बाह्य	क्रेडिट
1	संगीत का विज्ञान	100	20	80	6+0
2	संगीत का क्रियात्मक सिद्धान्त	100	20	80	6+0
3	प्रदर्शन एवं मौखिक तबला वादन / गायन	100	20	80	0+6
4	मंच प्रदर्शन तबला वादन / गायन	100	20	80	0+6

2/11/18

DEAN
FACULTY OF ARTS
M.G.C.G.V. Chitrakoot
Distt. Satna (M.P.)

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म0प्र0)

व्यावसायिक कला विभाग (कला संकाय)

बी0पी0ए0 (बेचलर ऑफ परफार्मिंग आर्ट "चार वर्षीय" तबला, वादन/गायन)

पूर्णांक :100 प्रथम वर्ष क्रेडिट : 6+0

सगीत का विज्ञान (साईंस ऑफ म्यूजिक I)

इकाई–1

1. संगीतोपयोगी ध्वनि की विशेषताएँ–
   तीव्रता, तारता, गुण, कालमान, उक्त सन्दर्भ में कंपन, कम्प विस्तार, आवृत्ति, उपस्वर, का परिचय।
2. संगीत, नाद, श्रुति, स्वर (शुद्ध, विकृत, चल, अचल), बाइस श्रुतियों में वर्तमान सप्तक की स्वर स्थापना, सप्तक (मंद्र, मध्य, तार), अष्टक, पूर्वांग, उत्तरांग, वर्ण, अलंकार, (पल्टा), स्थायी, अन्तरा, संचारी आभोग की परिभाषा।

इकाई–2

1. राग एवं थाट की परिभाषा व उनका तुलनात्मक अध्ययन, दस थाटों के नाम व स्वर,
2. आश्रयराग, वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, वर्जित स्वर, आरोह–अवरोह, राग स्वरूप (पकड़), राग की जाति (औडव, षाडव व सम्पूर्ण) का अध्ययन।

इकाई–3

1. ध्रुपद, धमार, ख्याल, तराना, चतुरंग, लक्षणगीत, स्वरमालिका (सरगम) मसीतखानी व रजाखानी गत का परिचय।
2. शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत एवं लोक संगीत का ज्ञान तथा गीत, गजल, होरी का परिचय एवं महत्व।

इकाई–4

1. गायक के परिक्षार्थियों के लिए तानपुरा तथा वाद्य के परिक्षार्थियों के लिए अपने–अपने वाद्य का सामान्य परिचय तथा उनके विभिन्न अवयवों का सचित्र वर्णन। साथ ही उनके तारों को विभिन्न स्वरों में मिलाने की जानकारी।
2. संगीत में शिक्षण की विधि।

इकाई–5

1. गायन और वादक के गुण–दोष, काकू आदि शब्द भेद का (संगीत रत्नाकर के आधार पर) अध्ययन।
2. पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे, अमीर खुसरो, मानसिंह तोमर, स्वामी हरिदास एवं तानसेन का जीवन परिचय तथा संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान।

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म0प्र0)

व्यावसायिक कला विभाग (कला संकाय)

बी0पी0ए0 (बेचलर ऑफ परफार्मिंग आर्ट "चार वर्षीय" तबला, वादन/गायन)

पूर्णांक :100 प्रथम वर्ष क्रेडिट : 6+0

संगीत के कियात्मक सिद्धांत (एप्लाइड प्रिंसीपल ऑफ इण्डियन म्यूजिक II)

इकाई–1

1. पाठ्यक्रम के राग, यमन, भैरव, भूपाली, खमाज, काफी, वृन्दावनी, सारंग, दुर्गा, बिलावल या अल्हैया बिलावल का शास्त्रीय परिचय।
2. निम्न अ एवं ब को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने का अभ्यास–

(अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए–

पाठ्यक्रम के रागों यमन, भैरव, भूपाली, खमाज, काफी, वृन्दावनीसारंग. दुर्गा, बिलावल या अल्हैया बिलावल में स्वरमालिका और लक्षणगीत i

(ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए–

पाठ्यक्रम के रागों में से प्रत्येक में एक मध्यलय अथवा रजाखानी गत अथवा द्रुतलय की रचना (आलाप तथा तानों, तोडों सहित)

इकाई–2

(अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए–

1. पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक–एक मध्यलय ख्याल।(आलाप तथा तानों सहित)
2. विभिन्न रागों में एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन सहित) एवं एक तराना।

(ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए–

पाठ्यक्रम के किसी एक राग में तीन ताल से भिन्न अन्य ताल में रचना का तानों सहित अभ्यास।

इकाई–3

1. लय (विलम्बित, मध्य, द्रुत), ठाह, दुगुन, मात्रा, ताल, विभाग, सम, तालों, खाली, ठेका, आवर्तन की जानकारी।
2. तबले का संक्षिप्त परिचय। तबले की बनावट व उसके विभिन्न अंगों का सचित्र वर्णन।

इकाई–4

1. त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, झपताल, चौताल और धमार, तालों का परिचय ठाह सहित ताल–लिपि में लेखन।
2. मींड, कण, खटका मुर्की, आलाप, तान, बोल (मिजराब/जवा के बोल) प्रहार (आकर्ष/अपकर्ष), सूत, ज़मज़मा, और तोडा का पारिभाषिक परिचय।

इकाई–5

1. पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे स्वरलिपि का ज्ञान।
2. लगभग 400 शब्दों में संगीत संबधी किसी विषय पर निबंध।

02/11/18

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म0प्र0)

व्यावसायिक कला विभाग (कला संकाय)

बी0पी0ए0 (बेचलर ऑफ परफार्मिंग आर्ट "चार वर्षीय"तबला, वादन/गायन)

पूर्णांक :100 प्रथम वर्ष क्रेडिट : 0+6

गायन/स्वरवाद्य प्रायोगिकः- I प्रदर्शन एवं मौखिक
(डेमोन्सट्रेशन एण्ड वायवा वाईस)

1. पूर्व पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति एवं किन्हीं दो थाटों में दस–दस अलंकारों का अभ्यास। गायन के विद्यार्थियों हेतु पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका और लक्षणगीत का गायन।
2. पाठ्यक्रम के राग– यमन, भैरव, भूपाली, खमाज, काफी, वृन्दावनीसारंग, दुर्गा, बिलावल या अल्हैया बिलावल।
   अ. पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय ख्याल/रजाखानी गत/मध्यलय रचना का पाँच तानों सहित प्रदर्शन।
   ब. पाठ्यक्रम के किसी एक राग में ध्रुपद तथा एक तराने का गायन अथवा किसी एक राग में तीनताल से भिन्न अन्य ताल में रचना का अपने वाद्य पर प्रदर्शन।
3. आकाशवाणी द्वारा मान्य वन्दे मातरम्/भजन/देशभक्ति गीत का स्वरलय में गायन अथवा वादन या किसी धुन को अपने वाद्य पर प्रस्तुत करना।
4. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का हाथ से ताली देकर प्रदर्शन–
   त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, झपताल, चौताल एवं धमार तथा त्रिताल की दुगुन का अभ्यास।

02/11/18 02/11/18 2/11/18

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म0प्र0)

व्यावसायिक कला विभाग (कला संकाय)

बी0पी0ए0 (बेचलर ऑफ परफार्मिंग आर्ट "चार वर्षीय" तबला, वादन/गायन)

पूर्णांक :100 द्वितीय वर्ष क्रेडिट : 6+0

(गायन/स्वरवाद्य प्रथम प्रश्न पत्र)

संगीत का विज्ञान (साइंस ऑफ म्यूजिक I)

इकाई–1

1. टोन, मेजर टोन, माइनर टोन, सेमीटोन, अनुनाद, डोल, उपस्वर (स्वयंभु स्वर), प्रतिध्वनि, तरंगमान तथा तरंग वेग, ग्रंथि–प्रतिग्रंथि, स्वर अंतराल प्रमुख स्वर संवादो का अध्ययन।
2. स्केल–नेचुरल स्केल, डायटोनिक स्केल तथा टेम्पर्ड स्केल।

इकाई–2

1. हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक सप्तकों का तुलनात्मक अध्ययन।
2. पूर्वांग–उत्तरांग राग। वादी, संवादी स्वर से राग गायन के समय का संबंध, संधिप्रकाश राग, अध्वदर्शक स्वर, परमेल, प्रवेशक राग की जानकारी।

इकाई–3

1. राग के ग्रह आदि दस लक्षण। आविर्भाव, तिरोभाव, नायकी, गायकी, वाग्गेयकार की परिभाषा लक्षण एवं प्रकार।
2. गमक की परिभाषा और उसके प्रकार।

इकाई–4

1. मुगल काल से अब तक का संगीत का संक्षिप्त इतिहास।
2. सदारंग/अदारंग, गोपाल नायक, बैजू बख्शू हस्सू' हद्दू खाँ, भास्कर बुआ बखले, बाबा अलाउद्दीन खाँ, उ. हाफिज अली खाँ एवं उ. इनायत खाँ तथा पं. पन्नालाल घोष का जीवन परिचय तथा संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान।

इकाई–5

1. तत् (तंत्री), अवनद्ध, घन एवं सुषिर वाद्य वर्गीकरण का अध्ययन।
2. वितत् वाद्य का स्पष्टीकरण। गायन के विद्यार्थी के लिए तानपूरा का एवं वाद्य के विद्यार्थी हेतु, अपने–अपने वाद्य का संक्षिप्त ऐतिहासिक अध्ययन।

08/11/18

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म0प्र0)

व्यावसायिक कला विभाग (कला संकाय)

बी0पी0ए0 (बेचलर ऑफ परफार्मिंग आर्ट "चार वर्षीय"तबला, वादन/गायन)

पूर्णांक :100 द्वितीय वर्ष क्रेडिट : 6+0

संगीत के कियात्मक सिद्धांत
(एप्लाइड प्रिंसीपल ऑफ इण्डियन म्यूजिक II)

इकाई–1

1. निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय अध्ययन एवं पिछले पाठ्यक्रम के रागों का तुलनात्मक अध्ययन– बागेश्री, बिहाग, भीमपलासी, आसावरी, कामोद, केदार, देश, भैरवी, हमीर और पटदीप।
2. निम्न अ एवं ब को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने का अभ्यास।

(अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए–

- पाठ्यक्रम के पाठ्यक्रम के राग बागेश्री, बिहाग भीमपलासी, आसावरी, कामोद, केदार, देश, भैरवी, हमीर और पटदीप। किन्हीं पांच रागों में विलम्बित ख्याल। (आलाप तथा तानों सहित)
- पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय ख्याल। (आलाप तथा तानों सहित)

(ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए–

- पाठ्यक्रम के किन्ही पांच रागों में (आलाप, तानों/तोड़ो सहित) एक–एक विलम्बित गत अथवा मसीतखानी गत अथवा विलम्बित ख्याल।(गायकी अथवा तंत्रकारी सहित)
- पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय अथवा रजाखानी गत अथवा द्रुतलय की रचना। (आलाप तथा तानों/तोडों सहित)

इकाई–2

(अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए–

- एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन, चौगुन सहित) तथा एक तराना।

(ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए–

- पाठ्यक्रम के किसी एक राग में तीनताल से भिन्न अन्य ताल में रचना का तानों सहित अभ्यास।

इकाई–3

1. तान के प्रकार।
2. बोल आलाप, बोलतान, कृन्तन, जोड़, झाला, तारपरन तथा लागडाट की परिभाषा ।

इकाई–4

1. त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, झपताल, चौताल, धमार, तिलवाड़ा रूपक, तीव्रा तथा सूलताल के ठेकों का ज्ञान एवं दुगुन, चौगुन में लिखने का अभ्यास।
2. ठुमरी, कजरी, चैती और कव्वाली का परिचय।

इकाई–5

1. पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर स्वरलिपि व ताललिपि पद्धति का अध्ययन।
2. संगीत संबंधी विषय पर लगभग 400 शब्दों में निबंध लेखन।

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म0प्र0)

व्यावसायिक कला विभाग (कला संकाय)

बी0पी0ए0 (बेचलर ऑफ परफार्मिंग आर्ट "चार वर्षीय" तबला, वादन / गायन)

पूर्णांक :100 द्वितीय वर्ष क्रेडिट : 0+6

गायन / स्वरवाद्य प्रायोगिकः- I प्रदर्शन एवं मौखिक (डेमोन्सट्रेशन एण्ड वायवा वाईस)

1. पूर्व पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति एवं पाठ्यक्रम के राग बागेश्री, बिहाग भीमपलासी, आसावरी, कामोद, केदार, देश, भैरवी, हमीर और पटदीप। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से पिछले पाठ्यक्रम के रागों की पुनरावृत्ति।
   - अ. पाठ्यक्रम के किन्ही पाँच रागों में एक-एक विलम्बित ख्याल (आलाप-तान सहित) का गायन अथवा विलम्बित रचना / मसीतखानी गत (गायकी अथवा तंत्रकारी सहित) का प्रदर्शन।
   - ब. पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय ख्याल / रजाखानी गत / मध्यलय रचना का पाँच तानों सहित प्रदर्शन।
   - स. पाठ्यक्रम के विभिन्न रागों मे एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन चौगुन सहित) तथा एक तराना का गायन अथवा पाठ्यक्रम के किसी एक राग में तीनताल से भिन्न अन्य ताल में रचना का तानों सहित अपने वाद्य पर प्रदर्शन।
   - द. गायन के विद्यार्थी हेतु पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका, लक्षण गीत का गायन।
2. भजन / देशभक्ति गीत या सुगम संगीत की रचना का स्वरलय में गायन अथवा वाद्य पर प्रदर्शन या किसी धुन को अपने वाद्य पर प्रस्तुत करना।
3. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का हाथ से ताली देकर ठाह एवं दुगुल में बोलकर प्रदर्शन- त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, झपताल, चौताल, धमार, तिलवाड़ा, रूपक, तीव्रा तथा सूलताल।

02/11/18 02/11/18 2/11/18

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म0प्र0)

व्यावसायिक कला विभाग (कला संकाय)

बी0पी0ए0 (बेचलर ऑफ परफार्मिंग आर्ट "चार वर्षीय" तबला, वादन/गायन)

पूर्णांक :100 तृतीय वर्ष क्रेडिट : 6+0

(गायन/स्वरवाद्य प्रथम प्रश्न पत्र)

संगीत का विज्ञान (साइंस ऑफ म्यूजिक I)

इकाई–1

1. गांधर्व गान, निबद्ध और अनिबद्ध गान का सामान्य परिचय। अनिबद्ध के अंतर्गत रागालप्ति एवं रूपकालप्ति के भेद–प्रभेदों का अध्ययन।
2. मार्ग–देशी का प्रारंभिक परिचय।

इकाई–2

1. ग्राम–मूर्च्छना के लक्षण और भेदों का अध्ययन।
2. भरत एवं शारंगदेव की श्रुति-स्वर ब्यवस्था तथा चतुःसारणा।

इकाई–3

1. वीणा के तार पर पं. अहोबल द्वारा शुद्ध–विकृत स्वरों की स्थापना विधि एवं पं. श्री निवास द्वारा उसका स्पष्टीकरण।
2. ग्राम राग, देशीराग का वर्गीकरण, राग'रागिनी वर्गीकरण का परिचय।

इकाई–4

1. थाट–राग वर्गीकरण तथा शुद्ध, छायालग, और संकीर्ण राग वर्गीकरण का अध्ययन।
2. पं. व्यंकटमखी के 72 मेल, उत्तर भारतीय संगीत में एक सप्तक से 32 थाटों की निर्माण विधि एवं एक थाट से 484 रागों की उत्पत्ति। ग्राम–मूर्च्छना तथा मेल और थाट की तुलना।

इकाई–5

1. घराने की परिभाषा एवं स्पष्टीकरण। ख्याल के ग्वालियर, आगरा, दिल्ली, पटियाला, जयपुर और किराना घरानों का सामान्य परिचय तथा सेनिया घराने की सामान्य जानकारी।
2. उ. बडे गुलाम अली खां, पं. गजाननराव जोशी, पं. रविशंकर, उं. विलायत खाँ, पं. वी.जी. जोग, उ. बिस्मिलाह खाँ और पं. हरिप्रसाद चौरसिया का जीवन परिचय एवं संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान।

02/11/18 02/11/18 02/11/18

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म0प्र0)

व्यावसायिक कला विभाग (कला संकाय)

बी0पी0ए0 (बेचलर ऑफ परफार्मिंग आर्ट "चार वर्षीय" तबला, वादन/गायन)

पूर्णांक :100 तृतीय वर्ष क्रेडिट : 6+0

संगीत के कियात्मक सिद्धांत
(एप्लाइड प्रिंसीपल ऑफ इण्डियन म्यूजिक II)

इकाई–1

1. निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय एवं पिछले पाठ्यक्रम के रागों का तुलनात्मक अध्ययन– जैजैवन्ती, मालकौस, जौनपुरी, छायानट, बहार, तोड़ी, रामकली, तिलककामोद और पूरियाधनाश्री।
2. निम्न अ एवं ब को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने का अभ्यास।

(अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए–

- पाठ्यक्रम के किन्हीं छः रागों में (आलाप तथा तानों सहित) विलम्बित रचना का प्रदर्शन, लिखने का अभ्यास।
- पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय ख्याल का (आलाप तथा तानों सहित) गायन।

(ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए–

- पाठ्यक्रम के छः रागों में एक–एक विलम्बित गत अथवा मसीतखानी गत अथवा विलम्बित ख्याल का (आलाप तानों/तोडों सहित) प्रदर्शन।
- पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय अथवा रजाखानी गत अथवा द्रुतलय की रचना का (आलाप तथा तानों/तोडों सहित) प्रदर्शन।

इकाई–2

(अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए–

- एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन, तिगुन, चौगुन सहित) एवं एक तराना।

(ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए–

- किसी एक राग में तीनताल से पृथक अन्य ताल में रचना का गायकी अथवा तंत्रकारी सहित अभ्यास।

इकाई–3

1. आड, कुआड, लयों की जानकारी।
2. त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, झपताल, चौताल, धमार, तिलवाडा, रूपक, तीव्रा, सूलताल, आड़ाचौताल, दीपचंदी तथा झूमरा तालों का परिचय उन्हें तिगुन, चौगुन में लिखने का अभ्यास।

इकाई–4

1. स्वरलिपि एवं उसकी उपयोगिता। पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे स्वरलिपि के अतिरिक्त भारत में प्रचलित अन्य स्वरलिपियों का सामान्य ज्ञान।
2. स्टाफ नोटेशन (स्वरलिपि) पद्धति का सामान्य परिचय। पाठ्यक्रम के रागों के आरोह–अवरोह व पकड़ का इस पद्धति में लेखन।

इकाई–5

1. हार्मनी और मेलोडी।
2. लगभग 500 शब्दो में सगीत संबंधी किसी विषय पर निबंध लेखन।

02/11/18 02/11/18 2/11/18

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म0प्र0)

व्यावसायिक कला विभाग (कला संकाय)

बी0पी0ए0 (बेचलर ऑफ परफार्मिंग आर्ट "चार वर्षीय"तबला, वादन/गायन)

पूर्णांक :100 तृतीय वर्ष क्रेडिट : 0+6

(गायन/स्वरवाद्य)प्रायोगिकः-1 मौखिक एवं प्रदर्शन
(डेमोन्सट्रेशन एण्ड वायवा वाईस)

1. पूर्व पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति एवं पाठ्यक्रम के राग–जैजैवन्ती, मालकौस, जौनपुरी, पूरिया, छायानट, बहार, तोडी, बसन्त, रामकली, तिलककामोद और पूरियाधनाश्री। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से पिछले पाठ्यक्रम के रागों की पुनरावृत्ति।

   अ. पाठ्यक्रम के किन्हीं छः रागों में एक–एक विलम्बित ख्याल (आलाप–तान सहित) का गायन अथवा विलम्बित रचना/मसीतखानी गत (गायकी अथवा तंत्रकारी सहित) का प्रदर्शन।

   ब. पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय ख्याल/रजाखानी गत/मध्यलय रचना का पाँच तानों सहित प्रदर्शन

   स. पाठ्यक्रम के विभिन्न रागों में एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन, तिगुन व चौगुन सहित) तथा एक तराना का गायन। अथवा किसी एक राग में तीनताल से पृथक ताल मे रचना का गायकी अथवा तंत्रकारी सहित अभ्यास।

2. भजन/देशभक्ति गीत या सुगम संगीत की रचना का स्वरलय में गायन अथवा वाद्य पर प्रदर्शन या किसी धुन को अपने वाद्य पर प्रस्तुत करना।

3. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का हाथ से ताली देकर बोलकर प्रदर्शन–

   अ. त्रिताल, एकताल, दादर, कहरवा, झपताल, चौताल, धमार, तिलवाडा, रूपक, तीव्रा, सूलताल, आडाचौताल, दीपचंदी एवं झूमरा तालों की ठाह दुगुन एवं चौगुन।

   ब. त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा का तिगुन में प्रदर्शन।

02/11/18 02/11/18 2/11/18

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म0प्र0)

व्यावसायिक कला विभाग (कला संकाय)

बी0पी0ए0 (बेचलर ऑफ परफार्मिंग आर्ट "चार वर्षीय"तबला, वादन/गायन)

पूर्णांक :100 चतुर्थ वर्ष क्रेडिट : 6+0

(गायन/स्वरवाद्य प्रथम प्रश्न पत्र)
संगीत का विज्ञान (साइंस ऑफ म्यूजिक I)

इकाई–1

1. कर्णाटक ताल पद्धति।
2. हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक तालों का तुलनात्मक अध्ययन।

इकाई–2

1. संगीत में स्वर एवं रस का सम्बन्ध।
2. भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास।

इकाई–3

1. मूर्छना एवं आधुनिक थाटों की तुलना।
2. जाति तथा जाति के दस लक्षण।

इकाई–4

1. काकू ,कुतप तथा संगीत में इनकी उपयोगिता।
2. वाद्यों की बनावट, प्रयुक्त उपकरण एवं निर्माण विधि।

इकाई–5

1. श्रुतियों का मान (श्रुति इंटर वल्स) भिन्न पद्धति ,सेवर्ट पद्धति एवं सैंट पद्धति।
2. पं. ओंकारनाथ ठाकुर, उ. हाफिज अली खॉं का जीवन परिचय।

2/11/18 2/11/18 2/11/18

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म0प्र0)

व्यावसायिक कला विभाग (कला संकाय)

बी0पी0ए0 (बेचलर ऑफ परफार्मिंग आर्ट "चार वर्षीय" तबला, वादन/गायन)

पूर्णांक :100 — चतुर्थ वर्ष — क्रेडिट : 6+0

गायन/स्वरवाद्य द्वितीय प्रश्नपत्र
संगीत के कियात्मक सिद्धांत
(एप्लाइड प्रिंसीपल ऑफ इण्डियन म्यूजिक II)

इकाई–1

1. निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय एवं पिछले पाठ्यक्रम के रागों का तुलनात्मक अध्ययन–

शुद्धकल्याण, दरबारी कान्हडा, मियाँ मल्हार, अडाणा, विभास, कलावती, हंसध्वनि, शंकरा, सिंधूरा तथा मुलतानी, गौड सारंग ।

2. निम्न अ एवं ब को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने का अभ्यास।

(अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए–

- पाठ्यक्रम के किन्हीं छः रागों में (आलाप तथा तानों सहित) विलम्बित रचना का प्रदर्शन।
- पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय ख्याल का (आलाप तथा तानों सहित) गायन।
- पाठ्यक्रम के 7 रागों में एक–एक विलम्बित गत अथवा मसीतखानी गत अथवा विलम्बित ख्याल का (आलाप तानों/तोडों सहित) प्रदर्शन।
- पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय अथवा रजाखानी गत अथवा द्रुतलय की रचना का (आलाप तथा तानों/तोडों सहित) प्रदर्शन।

इकाई–2

(अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए–

- एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन, तिगुन, चौगुन सहित) एवं एक तराना।

(ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए–

- किसी एक राग में तीनताल से पृथक अन्य ताल में रचना का गायकी अथवा तंत्रकारी सहित अभ्यास।

इकाई–3

1. लयकारियों को समझाते हुए बियाड़ लय के लेखन का अभ्यास।
2. त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, झपताल, चौताल, धमार, तिलवाड़ा, रूपक, तीव्रा, सूलताल, आड़ाचौताल, दीपचंदी झूमरा, दुगुन, तिगुन, चौगुन तथा आड में लिखने का अभ्यास।

इकाई–4

1. रूद्र, पंचमसवारी, गजझम्पा तथा लक्ष्मी तालों का परिचय उन्हें दुगुन, तिगुन, तथा चौगुन में लिखने का अभ्यास।
2. कर्नाटकी संगीत के सप्त तालों का सामान्य ज्ञान ।

इकाई–5

1. रविन्द्र संगीत तथा नजरुल गीति की सामान्य जानकारी स्वर लिपि पद्धति के साथ ।
2. लगभग 500 शब्दो में सगीत संबंधी किसी विषय पर निबंध लेखन।

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म0प्र0)

व्यावसायिक कला विभाग (कला संकाय)

बी0पी0ए0 (बेचलर ऑफ परफार्मिंग आर्ट "चार वर्षीय"तबला, वादन/गायन)

पूर्णांक :100 चतुर्थ वर्ष क्रेडिट : 0+6

(गायन/स्वरवाद्य)प्रायोगिकः-1 मौखिक एवं प्रदर्शन

(डेमोन्सट्रेशन एण्ड वायवा वाईस)

1. पूर्व पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति एवं पाठ्यक्रम के राग–शुद्धकल्याण, दरबारी कान्हडा, मियॉ मल्हार, अडाणा, विभास, कलावती, हंसध्वनि, शंकरा, सिंधूरा तथा मुलतानी, गौड सारंग। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से पिछले पाठ्यक्रम के रागों की पुनरावृत्ति।

   अ. पाठ्यक्रम के किन्हीं छः रागों में एक–एक विलम्बित ख्याल (आलाप–तान सहित) का गायन अथवा विलम्बित रचना/मसीतखानी गत (गायकी अथवा तंत्रकारी सहित) का प्रदर्शन।

   ब. पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय ख्याल/रजाखानी गत/मध्यलय रचना का पाँच तानों सहित प्रदर्शन

   स. पाठ्यक्रम के विभिन्न रागों में एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन, तिगुन व चौगुन सहित) तथा एक तराना का गायन। अथवा किसी एक राग में तीनताल से पृथक ताल मे रचना का गायकी अथवा तंत्रकारी सहित अभ्यास।

2. भजन/देशभक्ति गीत या सुगम संगीत की रचना का स्वरलय में गायन अथवा वाद्य पर प्रदर्शन या किसी धुन को अपने वाद्य पर प्रस्तुत करना।

3. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का हाथ से ताली देकर बोलकर प्रदर्शन–

   अ. त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, झपताल, चौताल, धमार, तिलवाडा, रूपक, तीव्रा, सूलताल, आड़ाचौताल, दीपचंदी झूमरा, तालों की ठाह दुगुन एवं चौगुन।

   ब. त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा का तिगुन एवं आड़ में प्रदर्शन।

02/11/18 02/11/18 2/11/18

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म0प्र0)

व्यावसायिक कला विभाग (कला संकाय)

बी0पी0ए0 (बेचलर ऑफ परफार्मिंग आर्ट "चार वर्षीय" तबला, वादन/गायन)

पूर्णांक :100 चतुर्थ वर्ष क्रेडिट : 0+6

गायन/स्वरवाद्य प्रायोगिकः-2 मंच प्रदर्शन
(वोकल/इंस्ट्रूमेंट (स्वर वाद्य) टेक्निक -II स्टेज परफॉरमेन्स)

1. परीक्षार्थी द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम में से कोई एक राग रचना का (विस्तृत गायकी/तन्त्रकारी ध्रुपद / धमार भजन सहित) प्रदर्शन।
2. परीक्षक द्वारा दिये गये पांच रागों में से किसी एक राग की गायकी/तन्त्रकारी के साथ प्रस्तुति।
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से किसी एक राग में ठुमरी, टप्पा अथवा ठुमरी शैली पर आधारित रचना अथवा धुन का प्रदर्शन।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. संगीत शास्त्र दर्पण – श्री शांति गोवर्धन
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. सितार मलिका –
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. संगीत वाद्य – श्री लालमणि मिश्र
9. हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10. चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11. संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12. राग शास्त्र – डॉ. गीता बैनर्जी
13. संगीत मणि – डॉ. महारानी शर्मा
14. प्रणव भारती भाग 1 से 7 – पं. ओमकारनाथ ठाकुर
15. संगीतांजली भाग 1 से 7 – पं. ओमकारनाथ ठाकुर

02/11/19 02/11/19

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म0प्र0)

व्यावसायिक कला विभाग (कला संकाय)

बी0पी0ए0 (बेचलर ऑफ परफार्मिंग आर्ट "चार वर्षीय"पखावज/लोक संगीत) I year

पूर्णांक :100 लोक संगीत शास्त्र क्रेडिट : 6 + 0

इकाई : 1 – लोक संगीत की परिभाषा, उत्पत्ति तथा विकास
बुन्देलखण्ड का भौगोलिक एवं ऐतिहासिक परिचय।

इकाई : 2 – बुन्देलखण्ड के लोक संस्कृति का सामान्य ज्ञान निम्नलिखित बिन्दु के आधार पर – रीति–रिवाज, पारंम्परिक, वेशभूषा, उत्सव तीज–त्योहार

इकाई : 3 – बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति का सामान्य ज्ञान निम्नलिखित बिन्दु के आधार पर – सांस्कृतिक मेले, खेल–तमाशे, ग्रामीण देवी–देवता और बुन्देलखण्डी आहाने।

इकाई : 4 – बुन्देलखण्ड के पांच प्रसिद्ध कलाकारों का जीवन परिचय तथा लोक संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान।

इकाई : 5 – लोक संगीत में प्रयुक्त किन्ही पांच लय वाद्यों की बनावट एवं वादन का परिचय – ढोल, ढोलक, नगाड़ा, ताशा, खंजरी, डफ, चंग, मृदंग

0+6

पूर्णांक : 100 लोक संगीत – प्रायोगिक

1. बुन्देलखण्ड के आठ लोक गीतों का भावार्थ सहित क्रियात्मक ज्ञान।
2. पांच अलंकार एवं शुद्ध एवं विकृत स्वरों का ज्ञान।
3. लोक गीतों में प्रयुक्त होने वाले किन्हीं पांच तालों का क्रियात्मक ज्ञान–कहरवा, दादरा, रुपक, दीपचन्दी, तीव्रा।

02/11/18 2/11/18 2/11/18 2/11

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म0प्र0)

व्यावसायिक कला विभाग (कला संकाय)

बी0पी0ए0 (बेचलर ऑफ परफार्मिंग आर्ट "चार वर्षीय" पखावज / लोक संगीत) IInd year

पूर्णांक :100 लोक संगीत शास्त्र क्रेडिट : 6+0

इकाई : 1 – बुन्देलखण्ड के निम्नांकित पारम्परिक लोकगीतों का अध्ययन – संस्कार, ऋतु उत्सव, धार्मिक गीत।

बुन्देलखण्ड के निम्नांकित पारम्परिक लोकगीतों का अध्ययन – श्रमगीत, मनोरंजन गीत, कथा गीत, ऐतिहासिक, राष्ट्रीय उत्सव।

इकाई : 2 – बुन्देलखण्ड के निम्नांकित लोक नृत्यों का दर्शाये गये बिन्दुओं के आधार पर अध्ययन – नृत्य, राई, बधाई, सैरा, दीवारी, कर्मा, सजनी, सुआ गीत

इकाई : 3 – बुन्देलखण्ड के निम्नांकित लोकवाद्यों का परिचय – एकतारा, चिमटा, मंजीरा, कसेरु, लोटा, चटकोला, खटताल।

बुन्देलखण्ड के किन्हीं चार लोक नाट्यों का अध्ययन।

इकाई : 4 – मध्य प्रदेश की लोक संस्कृति का सामान्य परिचय।

मध्य प्रदेश के लोक गीतों का वर्गीकरण के आधार पर सामान्य अध्ययन।

इकाई : 5 – मध्य प्रदेश के आठ प्रमुख लोक कलाकारों का अध्ययन – जीवन परिचय एवं योगदान।

पूर्णांक : 100 लोक संगीत – प्रायोगिक 0+6

1. पाठ्यक्रम के तालों को ताली देकर बोलना।
2. पाठ्यक्रम के लोकगीतों का अभ्यास।
3. लोकनृत्य राई, कर्मा, बधाई, दीवारी, सुआ आदि का सामान्य ज्ञान। एवं प्रदर्शन
4. पिछले पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।

02/11/18 02/11/18 2/11/18

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म0प्र0)

व्यावसायिक कला विभाग (कला संकाय)

बी0पी0ए0 (बेचलर ऑफ परफार्मिंग आर्ट "चार वर्षीय"पखावज / लोक संगीत) III year.

पूर्णांक :100 लोक संगीत शास्त्र क्रेडिट : 6+0

इकाई : 1 – मध्य प्रदेश के निम्नांकित प्रमुख लोकनाट्यों का अध्ययन। मांच (मालवा), स्वांग (बुन्देलखण्ड), नाच (छत्तीसगढ़), जिन्दवा (बघेलखण्ड), रासमण्डल (निमाड़)

इकाई : 2 – मध्य प्रदेश के 5 एवं भारत के प्रमुख 5 लोक कलाकारों का जीवन परिचय एवं योगदान

इकाई : 3 – मध्य प्रदेश के प्रमुख 5 लोकनृत्यों का अध्ययन।

इकाई : 4 – मध्य प्रदेश की लोक संस्कृति का आंचलिक आधार पर विस्तृत परिचय।

इकाई : 5 – वर्तमान परिवेश में लोक गीतों की उपयोगिता, महत्व एवं संरक्षण। लोक नृत्य एवं लोक गीतों का ग्रामीण एवं शहरी जीवन से संबंध तथा प्रभाव

पूर्णांक : 100 **लोक संगीत – प्रायोगिक** 0+6

1. बुन्देलखण्ड के लोकगीत एवं लोकनृत्यों का अभ्यास एवं प्रदर्शन
2. मध्य प्रदेश के लोकगीत एवं लोकनृत्यों का अभ्यास एवं प्रदर्शन।
3. पाठ्यक्रम के तालों का परिचय एवं प्रदर्शन।
4. पिछले पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।